पॉटिंग मिश्रण

विभिन्न रुट ट्रैनर साइजों में कुल 37 प्रकार के पोटिंग मिक्चर का प्रयोग किया गया। जिसमें अधिकतम पौध वृद्धि मिट्टी, रेत एवं गोबर खाद (1:1:1) के साथ-साथ 60 ग्राम वैम का मिश्रण प्रति पौध उपयोग में लाने पर पायी गई। अतः यह मिश्रण इस प्रजाति की पौध वृद्धि के लिये अतयंत उपयोगी होगा।

रुट ट्रैनर का साइज

300 से 400 सीसी साइज के रुट ट्रैनर पौधो की अच्छी वृद्धि के लिए उपयुक्त पाये गये।

रोपण हेतु पौध ऊँचाई/आयु

उपरोक्त साईज के रुट ट्रैनर मे तैयार 06 से 08 माह पुराने पौधे को रोपण हेतु उपयोग किया जा सकता है। रोपण के समय पौधे की कुल लंबाई 92 से 95 सेमी या अधिक होना चाहिये।

उपयोग

आंवला को मुख्यतया फल उत्पाद के रूप में लगाया जाता है। आंवले के फल का अचार, मुरब्बा एवं आर्युवेदिक औषधीय में होता है। इसके फल शक्तिवर्धक एवं विटामिन "सी" से भरपूर होने के साथ-साथ इनमें पाये जाने वाले फिनॉल के कारण कैन्सर प्रतिरोधक क्षमता होती है। सूखे हुए फल रक्तस्त्राव, प्रवाहिका, अल्परक्तता, अजीर्ण तथा खांसी के लिए अत्यंत लाभकारी होते हैं। आंवले के फल से तैयार किया जाने वाला त्रिफला चूर्ण आंखों एवं पैट की बीमारी के लिए रामबाण है। दूसरी ओर इसका उपयोग च्यवनप्राश तैयार करने में होने के कारण यह शारीरिक वृद्धि एवं स्वास्थ्य के लिए एक उपयोगी एवं प्रचलित टॉनिक है।

रुट ट्रैनर में तैयार किए गए देशी आंवलों के पौधों पर उन्नत किस्म के वृक्षों, जिनमें पहले से फल आ रहे हों एवं अच्छी गुणवत्ता के हों से डालियां काटकर 08 से 10 सेमी के टुकड़ों को क्लेफ्ट पद्धति से ग्राफ्ट करने पर अच्छी गुणवत्ता के ग्राफ्टेड पौधे तैयार किए जा सकते हैं। अत्याधिक गर्मी एवं अत्याधिक सर्दी के मौसम में ग्राफ्टिंग का कार्य नहीं किया जाना चाहिए।01 किलोग्राम आंवला फल से 04 से 05 ग्राम बीज तैयार होता है।

ग्राफ्टेड आंवले के वृक्षों में चौथें वर्ष फल आना शुरू हो जाता है जबकि बीजू वृक्ष में सामान्यतः फल आने में 08 से 10 वर्ष लगते हैं।

संपर्क

डॉ. अर्चना शर्मा

वरिष्ठ वैज्ञानिक

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (म.प्र)

(0761) 2666529, 2665540

आँवला रूट ट्रेनर में उच्च गुणवत्ता के पौध तैयारी

(एम्बिलिका ऑफीसिनेलिस)

बीज उत्पादकता प्रभाग

राज्य वन अनुसंधान संस्थान

पोलीपाथर, जबलपुर (म.प्र.) 482008

www.mpsfri.org

Scanned with OKEN Scanner

आँवला - रुट ट्रैनर में उच्च गुणवत्तता के पौध तैयारी

प्रजाति का नाम - आँवला
वानस्पतिक नाम - एम्बिलिका ऑफीसिनेलिस

परिचय -

आँवला संपूर्ण लोकों में पवित्र वृक्ष है। अर्थात् सब पापों को हरने वाले वृक्ष की जड़ में विष्णु, ऊपरी भाग में पितामह ब्रम्हा, तने में शिव, शाखाओं में मुनिगण, टहनियों में देवता, पत्तों में वसु, फूलों में मरूत, फलों में समस्त प्रजापति वास करते हैं। भगवान विष्णु के श्वेत कणों से निर्मित चंद्र के समान कांति युक्त एक बूंद के पृथ्वी पर गिरने से आँवला जैसे महान वृक्ष की उत्पत्ति हुई। पुराणों में लेख है कि आँवला के वृक्ष जहां होते हैं वहां लक्ष्मी का निवास होता है।

पहचान

यह मध्यम आकार का फलदार, औषधीय, पर्णपाती वृक्ष है। यह यूफोर्बियेशी कुल का वृक्ष है। यह मुख्यतः नम उष्ण प्रदेशों में पाया जाता है किन्तु शुष्क क्षेत्रों में भी इसे आसानी से उगाया जा सकता है।

प्राप्ति स्थान

यह वृक्ष भारत के लगभग सभी भागों में पाया जाता है। म.प्र. में यह मुख्य रूप से पन्ना, सिवनी, मण्डला, बालाघाट आदि जिलों में पाया जाता है। उत्तर प्रदेश में यह मुख्य रूप से बनारस, प्रतापगढ़ में पाया जाता है। पन्ना जिले में पाये जाने वाला आँवला सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

स्थानीय कारक (Locality Factor)

यह मुख्य रूप से लाल, काली, मुरम, रेतीली ,दोमट, काली चिकनी लेटेराइट मिट्टी में सफलता पूर्वक वृद्धि करते हैं।

बीज चक्र (Seed Cycle)

प्रतिवर्ष फल आने के कारण बीज की प्राप्ति प्रतिवर्ष होती है।

ऋतुजैविकी (Phenology)

इस वृक्ष में फूल अप्रैल से अगस्त के मध्य लगते हैं जबकि फल अक्टूबर से जनवरी तक लगते हैं एवं परिपक्व फल फरवरी के अंतिम सप्ताह से मार्च के द्वितीय सप्ताह तक लगकर विदोहन हेतु तैयार होते हैं।

प्रतिकिलो बीजों की संख्या

प्रतिकिलो बीजों की संख्या 40000 - 45000 तक होती है।

जीवन क्षमता अवधि

बीज की जीवन क्षमता अवधि 06 से 12 माह तक होती है।

सुसुप्तावस्था

बीज में किसी भी तरह की सुसुप्तावस्था नहीं होती है परन्तु बीज का कवच अत्यंत कठोर होने के कारण इसमें बुवाई पूर्व प्राथमिक उपचार की आवश्यकता होती है।

अंकुरण क्षमता

बीज की अंकुरण क्षमता 40 से 60 प्रतिशत तक होती है जो कि 09 से 12 माह में सामान्य भंडारण की स्थिति मे 10 से 15 प्रतिशत तक रह जाती है।

पौध प्रतिशत

पौध प्रतिशत 30 से 45 तक पाया जाता है।

उपयुक्त भंडारण विधि

कम तापमान अर्थात् 10ीं॰ पर पॉलीथीन बैग में रखने पर 1) वर्ष तक 25 से 30 प्रतिशत अंकुरण प्राप्त होता है।

उपयोगिता की अवधि

बीज संग्रहण के पश्चात् 06 से 09 माह के अंदर उपयोग में लिया जाना चाहिए।

बुआई पूर्व उपचारण

10 प्रतिशत सांद्रता के सल्फुरिक अम्ल के साथ 5 मिनिट उपचार अथवा 24 घंटे साधारण पानी में भिगोकर उपयोग करने पर अंकुरण शीघ्र एवं अधिक प्राप्त होता है।

अंकुरण हेतु उपयुक्त माध्यम

अच्छे अंकुरण हेतु उपयुक्त माध्यम रेत + मिट्टी को 2:1 के अनुपात में उपयुक्त पाया गया।

बुआई का समय

बीज की बुवाई का उपयुक्त समय माह अप्रैल से मई के मध्य होता है।

100 पौधे हेतु आवश्यक बीजों की मात्रा

100 पौधे तैयार करने हेतु 5 से 7 ग्राम बीज की आवश्यकता होती है।

बुआई हेतु उपयुक्त विधि

सीधे बीज की बुआई जर्मिनेशन ट्रे अथवा क्यारी में 4 से 5 सेमी. रेत की परत बिछाकर उपरोक्त दर्शित उपचारण पश्चात् बुवाई करने पर सामान्य अंकुरण से 20 प्रतिशत अधिक अंकुरण प्राप्त होता है। परंतु सीधे उक्त उपचारण से बीज उपचारित कर रुट ट्रैनर में भी बीज की बुआई की जा सकती है।

रुट ट्रैनर में बीमारी एवं बचाव

रुट ट्रैनर में पौधों में सफेद रंग के रूई के समान गुच्छे लग जाते हैं जिनमे पाये जाने वाले कीट से पौधे की टहनियां एवं अन्य भाग सूख जाते हैं इसके साथ ही इसके पौधों में दीमक का प्रकोप अत्यंत देखा गया है। जिससे बचाव के हेतु रोगार नामक कीटनाशक दवा का 01 प्रतिशत सांधता के घोल का प्रयोग सप्ताह में दो बार पत्तियों एवं शाखाओं पर करना चाहिए इसके साथ ही एन्डोसल्फॉन एवं बैविस्टीन का भी 01 प्रतिशत सांधता वाले घोल का प्रयोग सप्ताह में दो बार करना अत्यंत आवश्यक होता है।

9. Correspondence files

Scanned with OKEN Scanner